॥ श्रीचित्रापुर मठ त्रिशती भजन ॥

विद्या दे माँ बुद्धि दे माँ सदा सन्मति दे दे माँ ।
भक्ति दे माँ शक्ति दे माँ जीवनमुक्ति दे दे माँ ॥ धृ ॥

हृदयकी वीणा बजाने वाली
आत्मका हंस सजानेवाली ।
दिव्य स्फुरण बन मन में बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ॥ १ ॥

वाणी तू ब्रह्माणी तू है
कला पूर्ण कल्याणी तू है ।
दिव्य स्फुरण बन मन में बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ॥ २ ॥

किस अन्याय से कुपित हुई थी
विवश हो इस विध लुप्त हुई थी ।
दिव्य स्फुरण बन मन में बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ॥ ३ ॥

© Shrī Chitrāpur Maṯh. All rights reserved
Shrī Chitrāpur Maṯh, Shirālī, Uttara Kannaḍa, Karnāṭaka - 581354, India
www.chitrapurmath.net

स्वीकार करो माँ क्षमा याचना
उद्धार करो माँ यही प्रार्थना।
दिव्य स्फुरण बन मन में बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ॥४॥

कुरुक्षेत्र हर स्तर का मिटाना
अन्तर बाह्य को शान्त बनाना ।
सरस्वती फिर दरशन देकर
सारस्वत को कृतार्थ करना
(अखिल जगत को कृतार्थ करना)
दिव्य स्फुरण बन मन में बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ॥५॥

Lyrics composed by Smt Shailajā Gāṅguly

Music composed by Smt Meerā Balsāver

Music Arranging done by Shrī Yeshwant Moolky

© Shrī Chitrāpur Math. All rights reserved